विषय- संस्कृत डॉ० ओम प्रकाश आर्य
बी॰ए॰स्नातक (प्रतिष्ठा) महाराजा कॉलेज, आरा
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र दिनांक - 21/05/2020
कादम्बरी - शुकनासोपदेश - बाणभट्ट

गद्यांश की व्याख्या

एवं समतिक्रामत्सु केषुचिद् दिवसेषु राजा चन्द्रापीडस्य यौवराज्याभिषेकं चिकीर्षुः प्रतीहारानुपकरण संभार संग्रहार्थमादिदेश। समुपस्थित यौवराज्याभिषेकं च तं कदाचिद् दर्शनार्थमागतमारूढविनयमपि विनीततरमिच्छन् शुकनासः सविस्तरमुवाच।

सान्वय व्याख्या - (एवम्) इस प्रकार (समतिक्रामत्सु केषुचिद् दिवसेषु) कुछ दिन बीत जाने पर (राजा) राजा तारापीड ने (चन्द्रापीडस्य) चन्द्रापीड का (यौवराज्याभिषेकम्) युवराज पद पर अभिषेक करने की इच्छा से (प्रतीहारान्) द्वारपालों को (उपकरणसंभार संग्रहार्थम्) अपेक्षित सामग्री समूह को संग्रह करने के लिए (आदिदेश) आदेश दिया।

(समुपस्थित यौवराज्याभिषेकम्) जिसका युवराज पद पर अभिषेक सन्निकट था (आरूढ़ विनयमपि) और जो पहले से ही विनयसम्पन्न था, (कदाचित् दर्शनार्थमागतम्) कभी दर्शन के लिए आए हुए (तम्) उस चन्द्रापीड को (विनीततरमिच्छन्) और भी अधिक विनीत बनाने की इच्छा करता हुआ (शुकनासः) मन्त्री शुकनास ने (स विस्तरम्) विस्तारपूर्वक (उवाच) कहा।

भावार्थ- इस प्रकार कुछ दिन बीत जाने पर युवराज पद पर चन्द्रापीड का अभिषेक करने के इच्छुक राजा तारापीड ने द्वारपालों को अभिषेकार्थ अपेक्षित सामग्री समूह को एकत्र करने के लिए आदेश दिया।

टिप्पणी :- समतिक्रामत्सु - सम् + अति + क्रम् + शतृ।
यौवराज्याभिषेकम् - युवा चासौ राजा च युवराजः (कर्मधारय), युवराजस्य भावः यौवराज्यम् (युवराज + ष्यञ्) यौवराज्येऽभिषेकः यौवराज्याभिषेकः तम् (सप्तमी तत्पुरुष)
चिकीर्षुः - कृ + सन् + उ।
उपकरणसंभारसंग्रहार्थम् - उपकरणानां संभारः उपकरण-संभारः (षष्ठी त०), तस्य संग्रहार्थम् (ष० तत्पुरुष)।
~~उपकरणम्~~ उपकरणम् - उप + कृ + ल्युट् = सामग्री।
संभारः (पुल्लिङ्ग) सम् + भृ + घञ् = समूह।
आदिदेश - आ + दिश् लिट् प्रथम पुरुष एकवचन।
~~समुप~~ समुपस्थित यौवराज्याभिषेकम् - सम्यग् उपस्थितः यौवराज्याभिषेकः यस्य सः तम् (बहुव्रीहिः)

Scanned with CamScanner

classmate

Date

Page

आरूढविनयम् - आरूढः विनयः यस्य सः तम् (बहुव्रीहिः)

वि + नी + अच् = विनयः ।

विनीततरम् - वि + नी + क्त = विनीत + तरप् (द्वितीयाएकवचन

इच्छन् - इष् + शतृ विशेषण (पुं०) प्रथमा एकवचन ।

Scanned with CamScanner